

LOGO

Your Coaching Name

LOGO

**For:- Class – 12<sup>th</sup> Arts (Bihar Board)****विषय :- मनोविज्ञान****अध्याय 1. मनोवैज्ञानिक गुणों में विभिन्नताएँ****LOGO****Here**

**Topic: -**

1. मानव में भिन्नता एवं गुना का मूल्यांकन।
  2. बुद्धि और बुद्धि का सिद्धांत
  3. बुद्धि में व्यक्तिगत भिन्नताएँ
  4. बुद्धि का मूल्यांकन।
  5. बुद्धि परीक्षण के प्रकार
  6. संस्कृति तथा बुद्धि।
  7. सांवेदिक बुद्धि।
  8. सर्जनात्मकता
- ☞ मनोविज्ञान का पिता किसे कहा जाता है- **विल्हेम मैक्समिलियन वुण्ट ( जर्मनी)**
- ☞ **शारीरिक भिन्नता** - ऊंचाई, वजन, शक्ति, बालों का रंग ..... आदि में भिन्न होते हैं
- ☞ **मनोवैज्ञानिक भिन्नता:-** अधिक या कम बुद्धिमान, प्रभावी या विनम, उच्च सृजनशील या कम सृजनशील .... आदि में भिन्न होते हैं
- ### 1. मानव प्रकारों में व्यक्तिगत विभिन्नताएँ
- ☞ **व्यक्तिगत विभिन्नता-** व्यक्ति की विशेषता व्यवहार तथा गुण में पाए जाने वाले भिन्नताओं को व्यक्तिगत भिन्नता कहते हैं
- व्यक्ति के व्यवहार में भिन्नता का कारण**
1. **व्यक्तिगत विशेषक** - सभी व्यक्ति की विशेषता, गुण, व्यक्तित्व .... आदि अलग होती है
  2. **स्थिति वाद** - किसी भी व्यक्ति का व्यवहार उसकी वर्तमान स्थिति से प्रभावित होती है
- मनोवैज्ञानिक गुणों का क्षेत्र**
1. **बुद्धि intelligence** - पर्यावरण को समझना सविवेक चिंतन करने तथा किसी चुनौती के सामने होने पर उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना बुद्धि कहलाता है
  2. **अभिक्षमता aptitude** - किसी कार्य को करने की विशेष योग्यता अभिक्षमता कहलाता है।
  3. **अभिरुचि interest** - किसी भी कार्य को करने के लिए जब हम प्रसन्न हो कर सन्तुष्टि पूर्ण तरीके उत्साह व जिज्ञासा के साथ उस कार्य को सम्पन्न करना अभिरुचि कहलाता है।

**4. व्यक्तित्व personality-** किसी व्यक्ति की विशेषताओं, व्यवहार और गुणों के समग्र रूप व्यक्ति का व्यक्तित्व कहलाता है

**5. मूल्य- value** आदर्श व्यवहारों के संबंध में व्यक्ति की अस्थाई विश्वास को मूल्य कहते हैं

**मनोवैज्ञानिक गुणों का मापन**

- ☞ **मूल्यांकन-** मनोवैज्ञानिक गुणों का मापन मूल्यांकन कहलाता है
- ☞ मनोवैज्ञानिक गुणों को समझने का पहला चरण उसका मूल्यांकन है।
- ☞ गुणों का मूल्यांकन औपचारिक और अनौपचारिक हो सकता है
- ☞ **औपचारिक मूल्यांकन-** औपचारिक मूल्यांकन व्यवस्थित, पूर्व- नियोचित सूचना - आधारित परीक्षण है जो यह मापते हैं कि छात्रों ने क्या और कितना अच्छा सीखा है।

☞ **अनौपचारिक मूल्यांकन -** अनौपचारिक आकलन मूल्यांकन के बे सहज रूप है जो आसानी से दिन-प्रतिदिन की कक्षा की गतिविधियों में शामिल किए जा सकते हैं जो छात्रों के प्रदर्शन और प्रगति को मापते हैं। यह मूल्यांकन परिवर्तित होता रहता है

**मनोवैज्ञानिक गुणों का मूल्यांकन विधि**

1. मनोवैज्ञानिक परीक्षण - (psychological test)
2. साक्षरतकर - (interview)
3. व्यक्तिक अध्ययन - (case study)
4. प्रेक्षण - (observation)
5. आत्म प्रतिवेदन- (self report)

**बुद्धि का अर्थ एवं परिभाषा**

- ☞ **अल्फ्रेड बिने** बुद्धि के विषय पर शोधकार्य करने वाले पहले मनोवैज्ञानिकों में से एक थे।
- ☞ उन्होंने बुद्धि को अच्छा निर्णय लेने की योग्यता, अच्छा बोध करने की योग्यता और अच्छा तर्क प्रस्तुत करने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया।

- ☞ **वेश्लर-** वेश्लर के अनुसार बुद्धि व्यक्ति की वह समग्र क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति सविवेक चिंतन करने, अच्छा व्यवहार करने तथा अपने पर्यावरण से प्रभावी रूप से निपटने में समर्थ होता है।
- ☞ वेश्लर ने बुद्धि को 'सार्वभौम क्षमता' कहा है?
- ☞ **गार्डनर और स्टर्नबर्ग -** इसके अनुसार एक बुद्धिमान व्यक्ति न केवल अपने पर्यावरण से अनुकूलन करता है बल्कि उसमें सक्रियता से परिवर्तन और परिमार्जन भी करता है।
- ☞ टरमन ने बुद्धि को अमूर्त चिंतन की योग्यता के रूप में" किसने परिभाषित किया।

### बुद्धि का प्रकार:-

थार्नडाइक के अनुसार बुद्धि के तीन प्रकार होते हैं:-

- 1- अमूर्ति बुद्धि -** इस बुद्धि के व्यक्ति कल्पनाशील एवं चिंतनशील होते हैं अमूर्ति बुद्धि वाले व्यक्ति वैज्ञानिक, दार्शनिक, लेखक, वकील ..... आदि बनते हैं।
- 2- सामाजिक बुद्धि -** ऐसी बुद्धि जिसमें व्यक्ति हमेशा समाज के प्रति समर्पित रहते हैं लोगों की मदद करना चाहते हैं ऐसे व्यक्ति के बुद्धि को सामाजिक बुद्धि कहते हैं
- 3- गामक बुद्धि (यांत्रिक बुद्धि या मूर्ति बुद्धि):-** ऐसी बुद्धि जिसमें व्यक्ति का मन यांत्रिक कार्य जैसे मशीन औजारों यंत्रों में अधिक लगता हो मूर्ति बुद्धि वाले व्यक्ति भविष्य में इंजीनियर, कारीगर, मैकेनिकल, मिस्ट्री आदि बन सकते हैं

### गैरैट के अनुसार भी बुद्धि के तीन प्रकार होते हैं:-

1. मूर्ति बुद्धि-
  2. अमूर्ति बुद्धि-
  3. सामाजिक बुद्धि-
- ☞ **बुद्धि का सिद्धांत**

### बुद्धि के सिद्धांत को दो वर्गों में विभाजित किया है:-

- 1- मनोमितिक उपागम
- 2- सूचना प्रक्रमण उपागम

- 1. मनोमितिक उपागम** बुद्धि को अनेक प्रकार की योग्यताओं का एक समुच्चय माना जाता है।
- 1.एक-कारक का सिद्धांत- अल्फ्रेड बिने

- |   |                                     |
|---|-------------------------------------|
| <b>2.द्वि कारक सिद्धांत -</b>                     | स्पीयरमैन                           |
| <b>3.प्राथमिक मानसिक योग्यताओं-</b>               | लुईस थर्सटन<br>(समूह कारक सिद्धांत) |
| <b>4.पदानुक्रमिक मॉडल.</b>                        | -आर्थर जेन्सेन                      |
| <b>5.बुद्धि-संरचना मॉडल</b><br>(त्रिआया सिद्धांत) | -जे.पी. गिलफोर्ड                    |
- 2. सूचना प्रक्रमण उपागम-** बौद्धिक तर्क तथा समस्या समाधान में व्यक्तियों द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रक्रियाओं का वर्णन किया जाता है।
- 1. बहु बुद्धि का सिद्धांत** - हावर्ड गार्डनर
  - 2. बुद्धि का त्रिचारीय सिद्धांत** -रॉबर्ट स्टर्नबर्ग
  - 3. मॉडल 'PASS** -जे.पी. दास जैक नागलीरी, किर्बी
- बुद्धि एक- कारक का सिद्धांत**
- ☞ अल्फ्रेड बिने ने एक-कारक का सिद्धांत दिया तथा उनके सहयोगी टर्मन और स्टर्न थे।
  - ☞ एक-कारक सिद्धांत में बुद्धि का केवल एक कारक बताया- सामान्य कारक।
  - ☞ अल्फ्रेड बिने के अनुसार व्यक्ति यदि किसी एक कार्य में सफल है तो वह अन्य सभी कार्यों में भी सफल हो सकता है
  - ☞ एक कारक सिद्धांत को निरंकुशवादी सिद्धांत कहा जाता है
- बुद्धि के द्वि कारक सिद्धांत**
- ☞ स्पीयरमैन ने 1927 में बुद्धि के द्विकारक सिद्धांत को प्रतिपादित किया।
- उनके अनुसार बुद्धि दो कारकों पर आधारित होती है:-**
- 1- सामान्य कारक (G-factor) -** सामान्य कारक का आधार अधिक बड़ा होता है। लगभग 95% बुद्धि सामान्य कारक पर आधारित होती है। बुद्धि का यह भाग एक व्यक्ति के सभी कार्यों या समस्याओं के समाधान में समान रूप से सहायक होता है।
  - ✓ सामान्य कारक व्यक्ति में जन्मजात होती है।
  - 2- विशिष्ट कारक (S-factor)-** इसकी मात्रा केवल 5% होती है। स्पीयरमैन के अनुसार प्रत्येक मानसिक कार्य करने

में कुछ विशिष्ट क्षमताओं की भी जरूरत पड़ती है क्योंकि प्रत्येक मानसिक कार्य एक-दूसरे से कुछ-न-कुछ भिन्न होता है। जैसे-अभियंता, डॉक्टर, वैज्ञानिक आदि सामान्य कारक के साथ ही साथ उनमें कुछ विशिष्ट कारक होती है जिसके कारण वे अपने क्षेत्र में विशिष्ट होते हैं।

विशिष्ट कारक व्यक्ति अर्जित करते हैं

### लुईस थर्स्टन (Louis Thurstone)

- ☞ प्राथमिक मानसिक योग्यताओं का सिद्धांत प्रस्तुत किया।
- ☞ बुद्धि के 7 प्रकार होते हैं जिन्हें योग्यता कहा जाता है
- ☞ सभी योग्यताएं अलग-अलग नहीं बल्कि एक साथ मिलकर समूह में काम करती है इसलिए उनके सिद्धांत को समूह कारक सिद्धांत कहा जाता है।
- ☞ सभी योग्यताओं में से एक प्रधान तत्व होता है बाकी सभी योग्यता इसके चारों तरफ घूमती है और प्रधान योग्यताओं को मजबूत बनाती है

#### बुद्धि के 7 प्रकार:-

- (1) **वाचिक बोध** - शब्दों से संबंधित योग्यता सामने वाले के शब्दों को समझना
- (2) **संख्यात्मक योग्यताएँ** - अंकों से संबंधित योग्यता
- (3) **देशिक संबंध** - स्थान से संबंधित योग्यता
- (4) **प्रात्यक्षिक गति** - सामने वाली किसी भी परिस्थिति को हल करने की योग्यता
- (5) **शब्द प्रवाह** - अपने शब्दों का प्रयोग करने की योग्यता
- (6) **स्मृति-याद रखने की योग्यता**
- (7) **आगमनात्मक तर्कना** - तर्क लगाने की योग्यता

#### बुद्धि-संरचना मॉडल या त्रिआयाम

- ☞ U S A निवासी जे.पी. गिलफोर्ड ने बुद्धि- संरचना मॉडल 1967 ई में प्रस्तुत किया जिसमें बौद्धिक विशेषताओं को तीन विमाओं में वर्गीकृत किया गया है- इसलिए इस सिद्धांत को त्रिआयाम सिद्धांत भी कहा जाता है

1. विषयवस्तु
2. सक्रियाएँ

#### 3. उत्पाद।

**1- विषय-** वस्तु - उस सामग्री या सूचना को विषय-वस्तु कहते हैं जिस पर व्यक्ति बौद्धिक क्रियाएँ करती है।

#### 1. वृश्य

#### 2. श्रवण

#### 3. शब्दिक

#### 4. सांकेतिक( अक्षर तथा संख्याएँ),

#### 5. व्यवहारिक (व्यक्तियों के व्यवहार)

**2- संक्रिया** - सूचनाओं पर बुद्धि द्वारा की जाने वाली क्रियाओं संक्रिया कहते हैं।

#### 1. सेज्जान

#### 2. स्मृति लेखन

#### 3. स्मृति धारण

#### 4. अपसारी चिंतन (आप परंपरागत चिंतन)

#### 5. अभिसारी चिंतन (परंपरागत चिंतन)

#### 6. मूल्यांकन

**3- उत्पाद** - सूचनाओं पर बुद्धि द्वारा की जाने वाली क्रियाओं के बाद जो निष्कर्ष निकलता है उसे उत्पाद कहते हैं।

#### 1. इकाई

#### 2. वर्ग

#### 3. संबंध

#### 4. व्यवस्था

#### 5. रूपांतरण

#### 6. निहितार्थ

✓ गिलफोर्ड के त्रिआयाम के मूल सिद्धांत में **(4×5×6)-120** कारक थे

☞ प्रथम संशोधन के बाद **(5×5×6)-150** कारक

☞ द्वितीय संशोधन के बाद **(6×5×6)-180** कारक

#### बहु बुद्धि का सिद्धांत

↗ इस सिद्धांत का प्रतिपादन हावर्ड गार्डनर ने किया था इसके अनुसार बुद्धि के 8 प्रकार होते हैं जो निम्न है-

#### 1. भाषिक बुद्धि

#### 2. तार्किक गणितीय

3. देशिक या स्थानिक बुद्धि
4. संगीतपरक
5. शारीरिक गति संवेदनापरक
6. अंतर्वैयक्तिक
7. वैयक्तिक
8. प्रकृतिविषयक

**1. भाषिक बुद्धि** - इस बुद्धि का संबंध लिखने-पढ़ने, सुनने, बातचीत करने, समझने आदि से होता है। जिस व्यक्ति में यह बुद्धि ज्यादा होगी वह अन्य लोगों से इस क्षमता को ज्यादा अच्छे ढंग से प्रदर्शित कर पाएगा। इस बुद्धि का उपयोग विशेषकर किंवि या लेखक करते हैं।

**2. तार्किक** - गणितीय बुद्धि - इस बुद्धि का संबंध 'आंकिक' समस्याओं से है। इसमें तर्क एवं प्रतीकों का उपयोग अमूर्त रूप से व्यक्ति करता है। इस बुद्धि का उपयोग विशेषकर वैज्ञानिक एवं यांत्रिक कार्यों में किया जाता है।

**3. देशिक या स्थानिक बुद्धि** - इस बुद्धि का संबंध प्रतिरूप निर्माण को बनाने की योग्यता से है। इस तरह की बुद्धि का उपयोग चित्रकारों एवं मूर्तिकारों द्वारा किया जाता है।

**4. संगीतपरक बुद्धि** - इस बुद्धि का प्रदर्शन संगीत तारत्व में उतार-चढ़ाव, संगीत के निर्माण और इसको परखने, गायन एवं वाद्ययंत्र बजाने में देखा जाता है। यह संगीतज्ञ, नृत्यकला में निपुण लोगों एवं गायकों के लिए आवश्यक है।

**5. शारीरिक गति संवेदनापरक बुद्धि** - यह बुद्धि सूक्ष्म मांसपेशीय गति के लिए आवश्यक कौशल एवं निपुणता से संबंधित है। इसकी आवश्यकता खेलकूद, शल्यक्रिया, शिल्प-रचना एवं नृत्य में निपुणता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

**6. अंतर्वैयक्तिक बुद्धि** - इस बुद्धि की आवश्यकता दूसरे व्यक्तियों की प्रेरणाओं, इच्छाओं एवं भावनाओं तथा क्रियाओं को समझने की क्षमता से संबंधित है। इस बुद्धि का उपयोग विक्रेता, राजनीतिज्ञ, शिक्षकों एवं धर्म-प्रचारकों द्वारा की जाती है।

**7. अंतःव्यक्ति-** इस बुद्धि का संबंध अपने-आपको समझने एवं अपनी 'पहचान' संबंधी ज्ञान को विकसित करने से है।

और अपने व्यवहार को उचित ढंग से निर्देशित करने की एक क्षमता है।

**8. प्रकृतिवादी बुद्धि** - इस बुद्धि का उपयोग वनस्पतियों एवं पशुओं की पहचान और उनमें विभेद करने में की जाती है। इस प्रकार की बुद्धि किसानों, शिकारियों, जीवविज्ञान के विद्यार्थियों एवं पर्यटकों के लिए आवश्यक है।

### बुद्धि का त्रिचारीय सिद्धांत

- ⇒ यह सिद्धांत रॉबर्ट्स स्टर्नबर्ग ने दिया। स्टर्नबर्ग के अनुसार "बुद्धि वह योग्यता है जिससे व्यक्ति अपने पर्यावरण के प्रति अनुकूलित होता है।"
- ⇒ अपने तथा अपने समाज और अपनी संस्कृति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पर्यावरण के कुछ पक्षों का चयन करता है और उन्हें परिवर्तित करता है।

**1. घटकीय-** बुद्धि द्वारा मनुष्य किसी समस्या का समाधान करने के लिए प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करता है। ऐसे व्यक्ति प्राप्त आलोचनात्मक ढंग से सोचते हैं।

**उदाहरण:-** arts लैं या science

घटकीय बुद्धि के भी तीन प्रकार होते हैं: -

- ⇒ **ज्ञानार्जन-** जिसके द्वारा व्यक्ति अधिगम करता है तथा विभिन्न कार्यों को करने की विधि का ज्ञान प्राप्त करता है।
- ⇒ **योजना-** एक उच्च स्तरीय घटक होता है जिसके द्वारा व्यक्ति योजनाएँ बनाता है कि उसको क्या करना है और कैसे करना है
- ⇒ **निष्पादन** - इस बुद्धि द्वारा व्यक्ति किसी कार्य का वास्तव में निष्पादन करता है।
- ⇒ **अनुभाविक** - इस बुद्धि के द्वारा व्यक्ति किसी नई समस्या के समाधान हेतु अपने पूर्व अनुभवों का सर्जनात्मक रूप से उपयोग करता है। इस बुद्धि की तीव्रता वाले मनुष्य अपने पूर्व अनुभवों को इकट्ठा करके समस्याओं के मौलिक समाधान खोजते हुए आविष्कार करते हैं।
- ⇒ **व्यवहारिक** - वह बुद्धि है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में आने वाली पर्यावरणीय मांगों से

निपटता है ऐसी बुद्धि वाले मनुष्य नई वातावरण में जल्दी अनुकूलित हो जाते हैं।

- ⇒ बुद्धि की योजना, अवधान-भाव प्रबोधन तथा सहकालिक- आनुक्रमिक मॉडल
- ⇒ बुद्धि के इस मॉडल को जे.पी. दास, जैक नागलीरी तथा किर्बी 1994 ने विकसित किया। संक्षेप में यह मॉडल 'PASS' (planning, attention, simultaneous and successive) के नाम से जाना जाता है।
- ⇒ इस मॉडल के अनुसार बौद्धिक क्रियाएँ तीन तंत्रिकीय या स्नायुविक तंत्रों की क्रियाओं द्वारा संपादित होती हैं।
- ⇒ इन तीन तंत्रों को मस्तिष्क की तीन प्रकार्यात्मक इकाईयाँ कहा जाता है।

1. भाव प्रबोधन/अवधान
2. कूट संकेतन या प्रक्रमण
3. योजना

#### (1) भाव-प्रबोधन/अवधान :-

- ⇒ **भाव-** प्रबोधन- कार्य करने हेतु तैयार रहने की अवस्था है।
- ⇒ **अवधान -** ध्यान देना भाव प्रबोधन की दशा किसी भी व्यवहार के मूल में होती है, क्योंकि यही किसी उद्दीपक की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है।
- ⇒ **भाव-** प्रबोधन तथा अवधान ही व्यक्ति को सूचना का प्रक्रमण करने के योग्य बनाता है।
- ⇒ **भाव-** प्रबोधन के इष्टतम स्तर के कारण हमारा ध्यान किसी समस्या के प्रासंगिक पक्षों की ओर आकर्षित होता है।

#### 2. कूट संकेतन या प्रक्रमण

- (i) सहकालिक प्रक्रमण (Simultaneous):-
- (ii) आनुक्रमिक प्रक्रमण (Successive processing) :  
यह प्रक्रमण उस समय उत्पन्न होता है, जब सूचनाओं को एक के बाद एक क्रम में याद रखना होता है, ताकि एक सूचना का पुनः स्मरण ही अपने बाद वाली सूचना का पुनः स्मरण करा देता है।

उदा- गिनती वर्णमाला, वर्णमाला, गुणन सारणीयां आदि।

**3- योजना (Planning):-** जब किसी सूचना की प्राप्ति और उसके पश्चात् उसका प्रक्रमण हो जाता है, तो योजना सक्रिय हो जाती है।

⇒ योजना के कारण हम क्रियाओं के समस्त संभावित विकल्पों के बारे में सोचने लगते हैं, लक्ष्य की प्राप्ति हेतु योजना को कार्यन्वित करते हैं तथा कार्यन्वयन से उत्पन्न परिणामों की प्रभाविता का मूल्यांकन करते हैं।

⇒ योजना इस फलदायक नहीं होती है तो हम उस कार्य स्थिति की मांग के अनुरूप उसमें संशोधन करते हैं।

**CAS- Test:- Cognitive-assessment system**  
**संज्ञानात्मक मूल्यांकन प्रणाली**

- ⇒ प्रवर्तक - दास व नागलीरी
- ⇒ यह Test संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का मापन करता है।
- ⇒ इसमें वाचिक और अवाचिक दोनों प्रकार के कृत्य रखे गए हैं।
- ⇒ यह Test 5-18 वर्ष तक के बालकों की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का मापन करता है।
- ⇒ उपयोग - संज्ञानात्मक न्यूनता/अधिगम संबंधी कठिनाइयों को दूर करने हेतु।

#### बुद्धि में व्यक्तिगत भिन्नताएँ

- ⇒ कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिक बुद्धिमान होते हैं ऐसा उनकी आनुवंशिकता अथवा पर्यावरणी के प्रभाव से होता है।
- ⇒ बुद्धि पर आनुवंशिकता के प्रभावों के प्रमाण जुड़वाँ तथा दत्तक बच्चों के अध्ययन से प्राप्त होते हैं।
- ⇒ **बुद्धि-** आनुवंशिकता तथा पर्यावरण की अंतःक्रिया साथ-साथ पाले गए समरूप जुड़वाँ बच्चों की बुद्धि में 0.90 सहसंबंध पाया गया है।
- ⇒ अलग-अलग पर्यावरण में पाले गए समरूप जुड़वा बच्चों की बुद्धि में 0.72 सहसंबंध है।
- ⇒ साथ-साथ पाले गए भ्रातृ जुड़वाँ बच्चों की बुद्धि में लगभग 0.60 सहसंबंध

- ➲ साथ-साथ पाले गए भाई-बहनों की बुद्धि में **0.50** सहसंबंध
- ➲ अलग-अलग पाले गए सहोदरों की बुद्धि में **0.25** सहसंबंध पाया गया है।

### दत्तक बच्चों के अध्ययन

- ➲ बच्चों की बुद्धि गोद लेने वाले माता-पिता की अपेक्षा जन्म देने वाले माता-पिता के अधिक समान होती है।
- ➲ बुद्धि पर पर्यावरण के प्रभावों के संबंध में अध्ययन जैसे-जैसे बच्चों की आयु बढ़ती जाती है उनका बौद्धिक स्तर गोद लेने वाले माता-पिता की बुद्धि के स्तर के निकट पहुंचता जाता है।
- ➲ सुविधावांचित परिस्थितियों वाले घरों के जिन बच्चों को उच्च सामाजिक- आर्थिक स्थिति के परिवारों द्वारा गोद ले लिया जाता है उनकी बुद्धि प्राप्तांकों में अधिक वृद्धि दिखाई देती है।
- ➲ यह इस बात का प्रमाण है कि पर्यावरणी वंचन बुद्धि के विकास को घटा देता है जबकि प्रचुर एवं समृद्ध पोषण, अच्छी परिवारिक पृष्ठभूमि तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षादीक्षा बुद्धि में वृद्धि कर देती है।
- ➲ सामान्यतया सभी मनोवैज्ञानिकों की इस तथ्य पर सहमति है कि बुद्धि आनुवंशिकता (प्रकृति) तथा पर्यावरण (पोषण) की जटिल अंतःक्रिया का परिणाम होती है।

### बुद्धि का मूल्यांकन

- ➲ सर्वप्रथम **1905** में अल्फ्रेड बिने तथा थियोडोर साइमन ने औपचारिक रूप से बुद्धि के संशोधन करते समय उन्होंने मानसिक आयु (mental age, MA) का अवधारणा दिया।
- ➲ **मानसिक आयु** - किसी व्यक्ति का बौद्धिक विकास अपनी आयु वर्ग के अन्य व्यक्तियों की तुलना में कितना हुआ है।
- ➲ **कालानुक्रमिक आयु (chronological age, CA)** - जन्म लेने के बाद बीत चुकी अवधि के बराबर होती है।

- ➲ इसे ही वास्तविक आयु कहां जाता है
- ➲ एक तीव्रबुद्धि बच्चे की मानसिक आयु उसकी कालानुक्रमिक आयु से अधिक होती है जबकि एक मंदबुद्धि बच्चे की मानसिक आयु उसकी कालानुक्रमिक आयु से कम होती है।
- ➲ **बौद्धिक मंदता** - यदि किसी बच्चे की मानसिक आयु उसकी कालानुक्रमिक आयु से **2** वर्ष कम हो तो बिने तथा साइमन ने इसे बौद्धिक मंदता कहां है
- ➲ **1912** में एक जर्मन मनोवैज्ञानिक विलियम स्टर्न ने बुद्धि लब्धि (intelligence quotient, IQ) का अवधारणा विकसित किया।
- ➲ किसी व्यक्ति की मानसिक आयु को उसकी कालानुक्रमिक आयु से भाग देने के बाद उसको **100** से गुणा करने से उसकी बुद्धि लब्धि प्राप्त हो जाती है।

### मानसिक आयु

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{कालानुक्रमिक आयु}} \times 100$$

### कालानुक्रमिक आयु

- ➲ यदि किसी व्यक्ति की मानसिक आयु तथा कालानुक्रमिक आयु बराबर हो तो उसकी बुद्धि लब्धि **100** प्राप्त होती है।
- ➲ यदि मानसिक आयु कालानुक्रमिक आयु से अधिक हो तो बुद्धि लब्धि **100** से अधिक प्राप्त होती है।
- ➲ जब मानसिक आयु कालानुक्रमिक आयु से कम हो तो बुद्धि लब्धि **100** से कम प्राप्त होती है।
- ➲ उदाहरण के लिए एक **10** वर्ष के बच्चे की मानसिक आयु यदि **12** वर्ष हो तो उसकी बुद्धि लब्धि **120** होगी।
- ➲ **10** वर्ष के बच्चे की मानसिक आयु यदि **7** वर्ष होती तो उसकी बुद्धि लब्धि **70** होती।
- ➲ प्रत्येक आयु स्तर पर व्यक्तियों की औसत बुद्धि लब्धि **100** होती है।
- ➲ सामान्य बुद्धि-जिन व्यक्तियों की बुद्धि लब्धि प्राप्तांक **90** से **110** के बीच होती है उन्हें सामान्य बुद्धि वाला कहा जाता है।

- मानसिक मंदन-जिनकी बुद्धि लब्धि 70 से भी कम होती है वे मानसिक मंदन से प्रभावित समझे जाते हैं।
- प्रतिभाशाली-जिनकी बुद्धि लब्धि 130 से अधिक होती है वे प्रतिभाशाली समझे जाते हैं।
- सभी व्यक्तियों की बौद्धिक क्षमता एक समान नहीं होती।

### बुद्धि लब्धि के आधार पर व्यक्तियों का वर्गीकरण

बुद्धि लब्धि वर्ग	वर्णनात्मक वर्गनाम	जनसंख्या प्रतिशत
130 से अधिक	अतिश्रेष्ठ	2.2
120-130	श्रेष्ठ।	6.7
110-119	उच्च औसत	16.1
90-109	औसत	50.0
80-89.	निम्न औसत।	16.1
70-79	सीमावर्ती	6.7
70 से कम	मानसिक रूप से	2.2

### बुद्धि में विचलन

- किसी जनसंख्या में एक ओर तो प्रतिभाशाली तथा सर्जनात्मक व्यक्ति होते हैं वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसे बच्चे भी होते हैं जिन्हें बहुत साधारण कौशलों को सीखने में भी बहुत कठिनाई होती है। जनसंख्या के इसी अंतर को बुद्धि में विचलन कहा जाता है।
- ऐसे बच्चों को जिनमें बौद्धिक न्यूनता होती है उन्हें ‘मानसिक रूप से चुनौतीग्रस्त’ या ‘मानसिक रूप से मदित’ कहा जाता है।

### बौद्धिक प्रतिभाशालिता

- बौद्धिक रूप से प्रतिभाशाली व्यक्तियों का निष्पादन श्रेष्ठ प्रकार का होता है।
- प्रतिभाशाली व्यक्तियों के अध्ययन 1925 में लेविस टर्मन ने 130 या उससे भी अधिक बुद्धि लब्धि वाले 1500 बच्चों के जीवन का अध्ययन से शुरुआत हुई थी।

### प्रतिभाशाली बालकों की प्रमुख विशेषताएँ:-

- प्रतिभाशाली बालकों की मानसिक योग्यता सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक होती है।
- प्रतिभाशाली बालकों में उस उम्र के बालकों की अपेक्षा सीखने की योग्यता अधिक होती है।
- प्रतिभाशाली बालक अपने विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति उत्तम ढंग से करते हैं।
- प्रतिभाशाली बालकों में सामान्यीकरण तथा विभेदन करने की क्षमता पर्याप्त होती है।
- प्रतिभाशाली बालकों में मौलिक एवं सर्जनात्मक चिन्तन का स्तर ऊँचा होता है।
- प्रतिभाशाली बालक सूक्ष्म दृष्टि वाला और शीघ्र उत्तर देने वाला होता है।
- टर्मन (Terman) के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों में मौलिकता, आनन्दवृत्ति, सामान्यीकरण की क्षमता, धैर्य आदि गुण पाए जाते हैं।
- प्रतिभाशाली बालक अपनी जिंदगी की खुशी या दूसरे व्यक्तियों की खुशी को बढ़ाने में भरपूर योगदान करते हैं।

### बुद्धि परीक्षणों के प्रकार:-

परीक्षणों को देने की प्रक्रिया के आधार पर

- वैयक्तिक परीक्षण
- समूह परीक्षण
- वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण- वह परीक्षण होता है जिसके द्वारा एक समय में एक ही व्यक्ति का बुद्धि परीक्षण किया जा सकता है।
- वैयक्तिक परीक्षण में परीक्षणकर्ता परीक्षार्थी से निजी भावनाओं से परिचित होने का अवसर मिलता।
- परीक्षण सत्र के समय उसकी भावनाओं, भावदशाओं और अभिव्यक्तियों के प्रति संवेदनशील रहते हैं।
- वैयक्तिक परीक्षणों में परीक्षार्थी पूछे गए प्रश्नों का मौखिक अथवा लिखित रूप में भी उत्तर दे सकता है

- समूह बुद्धि परीक्षण- समूह बुद्धि परीक्षण को एक साथ बहुत से व्यक्तियों को समूह में दिया जा सकता है।

समूह परीक्षण में परीक्षणकर्ता को परीक्षार्थियों की निजी भावनाओं से परिचित होने का अवसर नहीं मिलता। समूह परीक्षण में परीक्षार्थी सामान्यतः लिखित उत्तर देता है और प्रश्न भी प्रायः बहुविकल्पी स्वरूप के होते हैं।

### बुद्धि परीक्षण के अन्य प्रकार:-

1- शाब्दिक (वाचिक परीक्षण)

2- अशाब्दिक परीक्षण

3- निष्पादन परीक्षण

1- शाब्दिक परीक्षण -

⇒ परीक्षार्थी को मौखिक अथवा लिखित रूप में प्रश्नों का उत्तर देना होता है

⇒ शाब्दिक परीक्षण केवल साक्षर व्यक्तियों को ही लिया जा सकता है।

**2. अशाब्दिक परीक्षण-** चित्रों अथवा चित्रनिरूपणों तथा प्रतिकों का उपयोग से यह परीक्षण लिया जाता है

#### उदाहरण -

⇒ **रैवेंस प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस (आर.पी.एम.)**- इसमें परीक्षार्थी को एक अपूर्ण प्रतिरूप दिखाया जाता है और उसे दिए गए अनेक वैकल्पिक प्रतिरूपों में से उस विकल्प को चुनना होता है जिससे अपूर्ण प्रतिरूप पूरा हो

**3. निष्पादन परीक्षण-** परीक्षार्थी को कोई कार्य संपादित करने के लिए कुछ वस्तुओं या अन्य सामग्रियों का प्रहस्तन करना होता है। इस प्रशिक्षण में लिखित भाषा के उपयोग की आवश्यकता नहीं होती।

⇒ निष्पादन परीक्षणों का एक लाभ यह है कि उन्हें भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों को आसानी से दिया जा सकता है।

#### उदाहरण -

⇒ **कोह (Kohs) के ब्लॉक-** डिज़ाइन परीक्षण-इस प्रशिक्षण में मैं लकड़ी के कई घनाकार गुटके होते हैं। परीक्षार्थी को दिए गए समय के अंतर्गत गुटकों को इस प्रकार बिछाना होता है कि उनसे दिया गया डिज़ाइन बन जाए।

⇒ **संस्कृति-** निष्पक्ष तथा संस्कृति-अभिनत में

- ⇒ परीक्षण किस सीमा तक एक संस्कृति की अपेक्षा किसी दूसरी संस्कृति का पक्ष ले रहा है।
- ⇒ बुद्धि परीक्षण उस संस्कृति के प्रति अभिनत प्रदर्शित करते हैं जिसमें वे बुद्धि परीक्षण विकसित किए जाते हैं।
- ⇒ किसी ऐसे परीक्षण का निर्माण करना लगभग असंभव कार्य है जो सभी संस्कृतियों के लोगों पर एक समान सार्थक रूप से अनुप्रयुक्त किया जा सके।
- ⇒ शाब्दिक परीक्षणों में पाई जाने वाली सांस्कृतिक अभिनति अशाब्दिक तथा निष्पादन परीक्षण में कम हो जाती है।
- ⇒ परीक्षण में ऐसे प्रश्न रखे जाएँ जिनमें भाषा का उपयोग न हो।

#### भारत में बुद्धि परीक्षण

- ⇒ **1930** में एस. एम. मोहसिन ने हिन्दी भाषा में बुद्धि परीक्षण के निर्माण का प्रयास करके एक पथप्रदर्शक कार्य किया।
- ⇒ सी. एच. राहस ने बिने के बुद्धि परीक्षण को उर्दू तथा पंजाबी भाषा में मानकीकृत करने का प्रयास किया।
- ⇒ महलानोबिस ने बिने के परीक्षण को बंगाली भाषा में मानकीकृत करने का प्रयास किया।

#### बुद्धि परीक्षण की उपयोगिता

- 1- शैक्षिक निर्देशन के लिए-** बुद्धि-परीक्षण से शैक्षिक निर्देशन तथा बुद्धि की अनुकूल शिक्षा में सहायता मिलती है
- 2- व्यावसायिक निर्देशन के लिए -** व्यावसायिक निर्देशन में भी बुद्धि-परीक्षणों से सहायता मिलती है। विशेष प्रकार के व्यवसाय के लिए विशेष मात्रा में बुद्धि की आवश्यकता होती है। अतः बुद्धि परीक्षण का उपयोग करके व्यक्तियों को अनुकूल कार्य का निर्देशन दिया जा सकता है।
- 3- कर्मचारी चयन के लिए-** कर्मचारी चयन के समय भी बौद्धिक परीक्षणों का उपयोग किया जाता
- 4- बौद्धिक दुर्बलता के निदान के लिए-** बच्चों की मानसिक दुर्बलता के निदान में बुद्धि-परीक्षण से बड़ी सहायता मिलती है।

बुद्धि- परीक्षण द्वारा बौद्धिक दुर्बलता से पीड़ित बालकों को पहचाना जा सकता है तथा अनुकूल उपचार किया जा सकता है।

### बुद्धि परीक्षणों के कुछ दुरुपयोग

- ⇒ किसी परीक्षण पर खराब प्रदर्शन बच्चों के मानसिक स्थिति को कमजोर कर सकता है सकता जिससे उनके निष्पादन और आत्म-सम्मान पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
- ⇒ बुद्धि परीक्षणों से संबंधित तालत अभ्यासों से सावधान रहना चाहिए तथा किसी व्यक्ति की शक्तियों और कमजोरियों के विश्लेषण के लिए किसी प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक की मदद लेनी चाहिए।
- ⇒ **संस्कृति किसे कहते हैं:-** - संस्कृति विश्वासों, मानदण्डों, कौशलों तथा प्रतीकों से है, जो एक समाज द्वारा विकसित होते हैं तथा उसके सदस्यों द्वारा इस्तेमाल किये जाते हैं उसे ही संस्कृति कहा जाता है।

**जैसे -** रीति रिवाज

### संस्कृति और बुद्धि के संबंध

- ⇒ संस्कृति तथा बुद्धि के बीच गहरा संबंध होता है। कारण, बुद्धि के विकास पर वातावरण का अनुकूल तथा प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- ⇒ व्यक्ति जिस संस्कृति में जन्म लेता है और उसका पालन-पोषण होता है, उसका प्रभाव व्यक्ति के बौद्धिक विकास पर पड़ता है।
- ⇒ यदि अच्छी संस्कृति हो तो व्यक्ति की बुद्धि का विकास अनुकूल दिशा में होता है।
- ⇒ उत्तेजक संस्कृति में रहने वाले बच्चों की बुद्धि उत्तेजक होती है।

### भारतीय संस्कृति में बुद्धि के स्वरूप

- ⇒ भारतीय संस्कृति में बुद्धि में संज्ञानात्मक तथा गैर संज्ञानात्मक दोनों ही प्रक्रियाओं के समन्वय पर बल डालता है।

प्रो० जे० पी० दास के अनुसार बुद्धि में कुछ विशेष कौशल जैसे मानसिक प्रयास, निश्चित क्रिया, संज्ञानात्मक सामर्थ्यता जैसे- ज्ञान, विभेदन तथा समझ आदि सम्मिलित होते हैं।

⇒ इस तरह से बुद्धि के एक मजबूत संज्ञानात्मक तत्व के अलावा अभिप्रेरणात्मक तथा भावात्मक तत्व भी सम्मिलित होते हैं।

### सांवेगिक बुद्धि(Emotional Intelligence):-

- ⇒ सांवेगिक बुद्धि को सर्वप्रथम सैलोवी तथा मेरर ने प्रस्तुत किया था।
- ⇒ **सांवेगिक बुद्धि-** अपने तथा दूसरे व्यक्तियों के संवेगों का परिवेक्षण करने और उनमें विभेदन करने की योग्यता तथा प्राप्त सूचना के अनुसार अपने चिंतन तथा व्यवहारों को निर्देशित करने की योग्यता ही सांवेगिक बुद्धि है।
- ⇒ **सांवेगिक लब्धि (emotional quotient, EQ) -** सांवेगिक बुद्धि का मापन सांवेगिक लब्धि कहलाता हैसंवेग लब्धि कहलाता

⇒ जिस प्रकार बुद्धि लब्धि (IQ) का उपयोग बुद्धि की मात्रा बताने में किया जाता है। उसी प्रकार सांवेगिक लब्धि (EQ) का उपयोग सांवेगिक बुद्धि की मात्रा बताने में किया जाता है।

### सांवेगिक-बुद्धि के दो प्रमुख तत्व हैं-

- (i) वैयक्तिक तत्व
  - (ii) अन्तवैयक्तिक तत्व
- (i) **वैयक्तिक तत्व** - अपने आप को समझना तथा अपने संवेगों को नियंत्रित करना वैयक्तिक तत्व कहलाता है। इसमें आने वाले मुख्य तत्व निम्नांकित हैं:-
- (a) अपने संवेगों से अवगत होना
  - (b) अपने संवेगों को प्रबंधित करना
  - (c) आत्म अभिप्रेरण
- (ii) **अन्तवैयक्तिक तत्व** - दूसरों व्यक्ति के संवेग को समझकर उसके प्रति संवेदनशीलता दिखाना तथा दूसरों व्यक्ति के साथ संबंधों को समुचित ढंग से निभाना अन्तवैयक्तिक तत्व कहलाता है।

### इस श्रेणी में निम्नांकित दो तत्व प्रधान हैं

- (a) दूसरों के संवेगों की पहचान करना
- (b) संबंधों को संचालित करना

इस प्रकार सांवेगिक बुद्धि के उपरोक्त कई तत्व हैं। इन तत्त्वों की प्रबलता होने से व्यक्ति में सांवेगिक बुद्धि अधिक होती है।

#### अभिक्षमता

- ⇒ **अभिक्षमता-** किसी विशेष क्षेत्र की विशेष योग्यता को अभिक्षमता कहते हैं।
- ⇒ **अभिक्षमता विशेषताओं का ऐसा संयोजन है जो व्यक्ति द्वारा प्रशिक्षण के उपरांत किसी विशेष क्षेत्र के ज्ञान अथवा कौशल के अर्जन की क्षमता को प्रदर्शित करता है।**
- ⇒ **अभिक्षमता एवं अभिरुचि में संबंध**
- ⇒ किसी विशेष क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति में अभिक्षमता के साथ-साथ अभिरुचि (interest) का होना भी आवश्यक है।
- ⇒ अभिरुचि किसी विशेष कार्य को करने की वरीयता को कहते हैं
- ⇒ किसी व्यक्ति में किसी कार्य को करने की अभिरुचि हो सकती है परंतु हो सकता है कि उसे करने की अभिक्षमता उसमें न हो तो कार्य संतोषजनक नहीं होगा।
- ⇒ किसी व्यक्ति में किसी कार्य को करने की अभिक्षमता हो परंतु उसमें उसकी अभिरुचि न हो तो कार्य संतोषजनक नहीं होगा।
- ⇒ व्यक्ति उसे कार्य में ज्यादा सफल हो सकता है जिस कार्य में व्यक्ति की अभिक्षमता और अभिरुचि दोनों हो सर्जनात्मकता किसे कहते हैं।
- ⇒ निर्माण करने की योग्यता'। अर्थात् नई चीज की रचना तथा किसी नवीन एवं मौलिक चीजों का उत्पादन करने की योग्यता सर्जनात्मकता कहलाती है।
- ⇒ इजरेली के अनुसार 'सर्जनात्मकता किसी नवीन वस्तु का निर्माण एवं परिचालन करने की क्षमता है।

### सर्जनात्मकता तथा बुद्धि का संबंध

- ⇒ सर्जनशील होने के लिए बुद्धि का होना आवश्यक है परंतु किसी व्यक्ति को उच्चस्तरीय बुद्धि यह सुनिश्चित नहीं करती है कि वह अवश्य ही सर्जनशील होगा।
- ⇒ टर्मन ने 1920 में पाया कि यह आवश्यक नहीं है कि अधिक बुद्धिमान व्यक्ति सर्जनशील भी हो।
- ⇒ न्यूनतम बुद्धि लम्बि (IQ)वाले व्यक्ति में भी सर्जनात्मक विचार उस उत्पन्न हो सकते हैं

#### वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बुद्धि के किनके सिद्धांत को एक-कारकीय सिद्धांत कहा गया है?
- उत्तर- बिने
2. गार्डनर के अनुसार निम्नांकित में किसे बुद्धि की एक श्रेणी नहीं माना गया है?
- उत्तर- जी कारक
3. किसने संज्ञानात्मक मूल्यांकन प्रणाली विकसित किया?
- उत्तर- जे० पी० दास एवं नागलेयरी
4. आगमनात्मक तर्कना को किसने बुद्धि का एक कारक माना है?
- उत्तर- थर्स्टन
5. इन द माइण्ड ऑफ मेन' के लेखक कौन हैं?
- उत्तर- मर्फी
6. 'संवेगात्मक बुद्धि' पद का प्रतिपादन किसके द्वारा किया गया है?
- उत्तर- सैलोवे तथा मेयर
7. प्राथमिक मानसिक योग्यता का सिद्धांत किसने प्रस्तुत किया?
- उत्तर- थर्स्टन
8. निम्नांकित में किसे मनोविज्ञान में मूल्यांकन विधि के एक यंत्र के रूप में नहीं समझा जाता है?
- उत्तर- मनश्चिकित्सा
9. बुद्धि संरचना मॉडल किसने विकसित किया?
- उत्तर- गिलफोर्ड
10. वैयक्तिक भिन्नता का तात्पर्य होता है

उत्तर- व्यक्तियों की विशेषताओं में अंतर, व्यक्तियों के व्यवहार पैटर्न में विभिन्नता

11. संवेगात्मक बुद्धि के तत्त्वों में निम्नलिखित में से किसे नहीं रखा जा सकता है?

उत्तर- दूसरे को धमकी देना

12. व्यक्ति के जीवन में सफलता का कितना प्रतिशत संवेगात्मक बुद्धि से निर्धारित होता है?

उत्तर- लगभग 70 प्रतिशत

13. रेवेन का प्रगतिशील मातृक परीक्षण है, एक

उत्तर- इनमें से कोई नहीं

14. जिस बच्चे की बुद्धि-लब्धि (IQ) 33-49 होती है, उसे किस श्रेणी में रखा जा सकता है?

उत्तर- गंभीर मानसिक दुर्बलता

17. मनोविज्ञान में सर्वप्रथम बुद्धि परीक्षण की शुरूआत किसने की?

उत्तर- बिने

18. निम्नलिखित में से कौन सर्जनात्मक चिन्तन की अवस्था नहीं है?

उत्तर- धारण

19. किसने बुद्धि को व्यक्ति की सार्वभौमिक क्षमता के रूप में परिभाषित किया है?

उत्तर- वेश्लर

20. किसने बुद्धि का त्रित्वीय सिद्धान्त प्रतिपादित किया?

उत्तर- गार्डनर

21. रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिक (RPM) किस तरह का बुद्धि परीक्षण है?

उत्तर- अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण

22. निम्नलिखित में से संस्कृति मुक्त परीक्षण कौन-सा है?

उत्तर- कैटेल बुद्धि परीक्षण

23. प्रतिभाशाली बालकों की सबसे बड़ी विशेषता है

उत्तर- संवेगात्मक परिपक्ता

24. निम्नलिखित में से कौन गिलफोर्ड के त्रिविमात्मक सिद्धान्त का कारक नहीं है?

उत्तर- संख्यात्मक योग्यता

25. किसने कहा कि, "अमूर्त चिन्तन की योग्यता ही बुद्धि है"?

उत्तर- टरमन

26. पास मॉडेल का विस्तारित रूप क्या है?

उत्तर- योजना, अवधान भाव प्रबोधन, सहकालिक अनुक्रमिक

27. बुद्धि के विषय पर शोध कार्य करने वाले पहले मनोवैज्ञानिक थे

उत्तर- बिने

28. निम्न में से कौन बुद्धि लब्धि का सही सूत्र है?

उत्तर- मानसिक उम्र/वास्तविक उम्र  $\times 100$

29. निम्नलिखित में से कौन शाब्दिक बुद्धि परीक्षण है?

उत्तर- स्टैनफोर्ड-बिने परीक्षण

30. गार्डनर के अनुसार निम्नांकित में से कौन बुद्धि के प्रकार में नहीं है?

उत्तर- अनुभवजन्य बुद्धि

31. मानसिक आयु के संप्रत्यय से किसने परिचय कराया?

उत्तर- बिने-साइमन

32. वह बुद्धि संप्रत्यय का प्रतिपादन किसने किया?

उत्तर- गार्डनर

33. बुद्धि का द्वि-कारक सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया?

उत्तर- स्पीयरमैन

34. किसने बुद्धि-लब्धि को श्रेणियों में विभाजित किया है?

उत्तर- हिलगार्ड, ऐटकिंसन तथा ऐटकिंसन

35. किसने बुद्धि के बहुबुद्धि सिद्धान्त को प्रतिपादित किया?

उत्तर- गार्डनर

36. गार्डनर ने कितने प्रकार की बुद्धि की पहचान किया है?

उत्तर- 8

37. ब्लॉक डिजाइन परीक्षण किस प्रकार का परीक्षण है?

उत्तर- अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण

38. किसने सर्जनात्मकता को निम्न तरह परिभाषित किया?

"सर्जनात्मकता किसी नवीन वस्तु का निर्माण एवं रचना करने की क्षमता है।"

उत्तर- इजरेली

39. किस वर्ष मोहसिन सामान्य बुद्धि-परीक्षण का निर्माण किया गया?

उत्तर- 1954

40. एक मूँढ़ व्यक्ति का बुद्धि-लब्धि विस्तार क्या होता है?

उत्तर- 50 से 69

41. बुद्धि लब्धि के संप्रत्यय का प्रतिपादन किसने किया?

उत्तर- स्टर्न

42. किसने 'बुद्धि को सार्वभौम क्षमता' कहा है?

उत्तर- वेश्लर

43. बुद्धि के एक कारक सिद्धांत के प्रतिपादक निम्न में से कौन हैं?

उत्तर- अल्फ्रेड बिने

44. जिन व्यक्तियों की बुद्धि लब्धि 80-89 के बीच होती है

उन्हें कहते हैं

उत्तर- मंद

45. किस वर्ष बुद्धि का पास-मॉडल विकसित हुआ?

उत्तर- 1994

46. "बुद्धि को अमृत चिन्तन की योग्यता के रूप में" किसने परिभाषित किया?

उत्तर- टरमन

47. निम्न में से कौन शाब्दिक परीक्षण नहीं है?

उत्तर- पास एलौंग परीक्षण, ब्लॉक डिजाइन परीक्षण

48. थर्स्टन के अनुसार बुद्धि की कितनी मानसिक योग्यताएँ हैं?

उत्तर- 7

49. गार्डनर के अनुसार निम्रांकित में से किसे बुद्धि का एक प्रकार नहीं माना गया है?

उत्तर- जी-कारक को

50. जिन व्यक्तियों की बुद्धि लब्धि 90 से 100 के बीच होती है, उन्हें कहते हैं

उत्तर- औसत

### लघु उत्तरीय

1. प्रश्न- वैयक्तिक भिन्नता क्या है?

उत्तर- विभिन्नता किन्हीं भी दो व्यक्तियों के व्यक्तित्व गुण एवं क्रियाओं में अंतर तथा एक-दूसरे से शारीरिक तथा मानसिक गुणों में भिन्नता को ही वैयक्तिक भिन्नता कहते हैं।

2. प्रश्न- बुद्धि क्या है?

उत्तर- बुद्धि एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक गुण है जिससे व्यक्ति तर्कसंगत ढंग से सोचने, उद्देश्यपूर्ण कार्य करने तथा अपनी जिंदगी की चुनौतियों को उपलब्ध संसाधनों के आधार पर निपटा लेने की क्षमता बुद्धि कहलाता है।

3. प्रश्न- बुद्धि के मुख्य प्रकारों की व्याख्या करें।

उत्तर-

(i) अमूर्त बुद्धि - ऐसी बुद्धि है जो अमूर्त समस्याओं के समाधान में सहायक होती है।

जैसे - (आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है?) आदि समस्याओं को समझाने में जो बुद्धि सहायक होती है, उसे ही अमूर्त बुद्धि कहा जाता है।

(ii) मूर्त बुद्धि - वह बुद्धि जो मूर्त समस्याओं के समाधान में मदद करता है, उसे मूर्त बुद्धि कहते हैं।

जैसे- मकान बनाने, हवाई जहाज बनाने, कम्प्यूटर बनाने आदि में जो बुद्धि सहायक होती है, उसे मूर्त बुद्धि कहते हैं।

(iii) सामाजिक बुद्धि - जो बुद्धि सामाजिक समस्याओं के समाधान में मदद करती है, उसे सामाजिक बुद्धि कहते हैं।

(iv) संवेगात्मक बुद्धि - इस प्रकार की बुद्धि का उल्लेख 1994 में गोलमैन ने किया है।

इसके पाँच संघटकों का उल्लेख किया:-

(a) जिन्हें अपने संवेगों की पहचान

(b) अपनें संवेगों का प्रबंध

(c) अपने आप को प्रेरित करना

(d) दूसरे के संवेगों की पहचान कर उन्हें प्रेरित करना

(e) संबंध निभाना

4. शाब्दिक बुद्धि परीक्षण तथा अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर- शाब्दिक बुद्धि परीक्षण

1. भाषा का उपयोग
2. यहाँ लिखने पढ़ने की आवश्यकता होती है। इसलिए इससे पढ़े लिखे लोगों की बुद्धि मापी जाती है।
3. यह परीक्षण वैयक्तिक तथा सामूहिक दोनों होता है।

### अशान्विक बुद्धि परीक्षण

1. भाषा का उपयोग नहीं होता है।
  2. यहाँ कार्यों के आधार पर बुद्धि का मापन होता है। इससे अनपढ़, अस्थे, बहरे, गूंगे बच्चों की भी बुद्धि मापी जा सकती है।
  3. यह परीक्षण वैयक्तिक होता है।
  - 5. प्रश्न- बुद्धि परीक्षण की उपयोगिताओं का वर्णन करें**
- उत्तर-** बुद्धि-मापन या परीक्षण का उपयोग निम्नलिखित क्षेत्रों में होता है-
- 1. शैक्षिक निर्देशन के लिए-** बुद्धि मापकों या परीक्षणों द्वारा बच्चों की बुद्धि की जाँच करके अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है।
  - 2. व्यावसायिक निर्देशन के लिए-** विशेष प्रकार के व्यवसाय के लिए विशेष मात्रा में बुद्धि की आवश्यकता होती है। अतः बुद्धि परीक्षण का उपयोग करके बालकों को अनुकूल कार्य का निर्देशन दिया जा सकता है।
  - 3. कर्मचारी चयन के लिए -** कर्मचारी चयन के समय भी बौद्धिक परीक्षणों का उपयोग किया जाता है
  - 4. बौद्धिक दुर्बलता के निदान के लिए -** इस प्रकार, बुद्धि-परीक्षण द्वारा बौद्धिक दुर्बलता से पीड़ित बालकों को पहचाना जा सकता है तथा अनुकूल उपचार किया जा सकता है।
  - 6. संस्कृति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।**

**उत्तर-** संस्कृति का तात्पर्य मूल्यों, विश्वासों, मानदण्डों, कौशलों तथा प्रतीकों के तंत्रों से है, जो एक समाज द्वारा विकसित होते हैं तथा उसके सदस्यों द्वारा इस्तेमाल किये जाते हैं।

**जैसे-** रिति-रिवाज

7. संस्कृति और बुद्धि के संबंधों को लिखें।

**उत्तर-** संस्कृति तथा बुद्धि के बीच गहरा संबंध होता है। कारण, बुद्धि के विकास पर वातावरण का अनुकूल तथा प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति जिस संस्कृति में जन्म लेता है, और उसका पालन-पोषण होता है, उसका निश्चित प्रभाव उसके बौद्धिक विकास पर पड़ता है। यदि प्रभावी संस्कृति होती है, तो व्यक्ति की बुद्धि का विकास पूर्ण रूप से अनुकूल दिशा में होता है। लेकिन, उत्तेजक संस्कृति में रहने वाले बच्चों की बुद्धि का विकास पूर्ण रूप से नहीं होता है।

8. प्रश्न- सांवेगिक बुद्धि का अर्थ बतायें

**उत्तर-** संवेगात्मक बुद्धि के अर्थ को स्पष्ट करते हुए गोलमैन (1995) ने कहा है कि संवेगात्मक बुद्धि का तात्पर्य उस संज्ञानात्मक योग्यता से है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने संवेगों के आधार पर दूसरे व्यक्ति के संवेगों को उत्तेजित करके अपने लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होता है।

9. प्रश्न- सांवेगिक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति की विशेषताओं का वर्णन करें।

**उत्तर-** सांवेगिक रूप से बुद्धिमान व्यक्तियों की कुछ विशेषताएँ निम्न प्रकार की हो सकती हैं-

- (i) अपनी भावनाओं और संवेगों को जानना और उसके प्रति संवेदनशील होना।
- (ii) दूसरे व्यक्ति के विभिन्न संवेगों को जानना और उसके प्रति संवेदनशील होना।
- (iii) अपने संवेगों को अपने विचारों से संबद्ध करना ताकि समस्या समाधान तथा निर्णय करते समय उन्हें ध्यान में रखा जा सके।
- (iv) अपने संवेगों और उनकी अभिव्यक्तियों को दूसरे से व्यवहार करते समय नियंत्रित करना ताकि शांति और सामंजस्य की प्राप्ति हो सके।

10. प्रश्न- सर्जनात्मकता को समझाइये।

**उत्तर-** 'निर्माण करने की योग्यता'। अर्थात् नई चीज की रचना तथा किसी नवीन एवं मौलिक चीजों का उत्पादन करने की योग्यता सर्जनात्मकता कहलाती है। इजरेली के